पंत के काव्य में मार्क्सवाद, प्रगतिवाद और पर्यावरण चेतना

सीमा सोनी
शोधार्थी हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश -पर्यावरण चेतना का कवि होने के लिए भी सामाजिक एवं मानवीय होना पड़ता है। साहित्य की रचना केवल मनुष्य के लिए की जाती है। नव-नव उन्मेश शालिनी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार कवि ही साहित्य या काव्य की सृष्टि जनहित में, व्यापक मानवता के हित में करता है। कहाँ तक कवि की रचनायें समाज सापेक्ष, मानवता के हित में होकर सामाजिकों, पाठकों में असर व प्रभाव डालती हैं। रचनात्मक बदलाव की दिशा में, यही उसकी प्रासंगिकता की पहचान होती है। पंत जी की दीर्घकालीन काव्य-साधना पर्यावरण चेतना सापेक्ष व्यापक मानवता की पक्षधर हैं। उनमें एक साथ पर्यावरण चेतना प्रकृति चित्रण और मानव जीवन की पक्षधरता अपने व्यापक एवं गहरे रूप में मुखर है, प्रस्तुत है, वर्णित है, उद्घाटित है। पंत के काव्य में शुरू से अन्त तक वैभव विलास का रंगीन रूप नहीं है, बल्कि पर्यावरण चेतना मूलक प्रकृति के नाना रूप-रंग, विविध रूपों-रंगों में रेखांकित हैं, जो पर्यावरण जागरुकता की दिशा में महत्वपूर्ण प्रेरणायें हैं। पंत के काव्य में पर्यावरण चेतना का अपना मौलिक अवदान है वर्तमान परिप्रेक्ष्य में।

मुख्य शब्द - मार्क्सवाद, प्रगतिवाद, पर्यावरण चेतना।

प्रस्तावना -

मार्क्स और मार्क्सवाद पर 20वीं शताब्दी के चौथे, पाँचवे, छठें और सातवें दशक में हिन्दी के अनेक कवियों ने पर्याप्त मात्रा में लिखा है। मार्क्सवाद के तहत सर्वहारा वर्ग की महत्ता है। पूँजीवाद, पूँजीपतियों, मिल-मालिकों, सत्तासीनों पर प्रहार है। कार्लमार्क्स के सामाजिक, आर्थिक विचार मार्क्सवाद के तहत हैं। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, विकासवाद, मूल्यवृद्धि व अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, मूल सभ्यता के विकास का सिद्धान्त। जगत की उत्पत्ति एवं विकास भौतिक शक्तियों के द्वन्द्व से होता है। दो वस्तुओं एवं शक्तियों के संघर्ष से तीसरी वस्तु की उत्पत्ति होती है। सृष्टि का, जगत का विकास किसी देवी प्रेरणा या कृपा से नहीं बल्कि द्वन्द्वात्मकता से ही होता है। किसी वस्तु की मूल्यवृद्धि के प्रमुख चार अंग हैं - मूल पदार्थ, स्थूल साधन, श्रमिक का श्रम और मूल्य वृद्धि। मूल पदार्थ के तहत पूँजीपतियों द्वारा मसीने, धन जुटाये जाते हैं, जिन पर पूँजीपतियों का व्यय होता है। श्रमिक वर्ग द्वारा अधिकाधिक परिश्रम से वस्तु का उत्पादन होता है। इस उत्पादन कर्म में श्रमिक वर्ग का श्रम और स्वास्थ्य का बलिदान होता है। किन्तु तिजोरियाँ पूँजीपतियों की भरी जाती हैं। लाभ की दशा में उचित बँटवारा न होने के कारण शोषण को प्रोत्साहन मिलता है, जो मानवता के लिए महान अभिशाप है। मार्क्स के अनुसार श्रमिक वर्ग शोषित है और पूँजीपतिवर्ग शोषक है। शोषक और शोषित, अमीर और गरीब दो ही जातियाँ हैं समाज में। पंत कृत युगान्त, युगपथ और युगवाणी की अधिकांश कवितायें मार्क्सवाद व प्रगतिवाद की चेतना से सम्पृक्त हैं। निराला जी ने मार्क्सवाद को अपने अस्तित्व दर्शन के अनुरूप पचाया और रचाया है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', दिनकर, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, नरेन्द्र शर्मा जैसे कवियों ने भी मार्क्स की प्रशंसा में रचनायें की है। उस समय समूचे विश्व में मार्क्सवाद हावी एवं प्रभावी था। रूस के विघटन के बाद मार्क्सवाद कमजोर पड़ गया।

विश्लेषण:

पंत कृत 'युगवाणी' भारतीय साम्यवाद की वाणी है। 'युगवाणी' की अनेक कवितायें मार्क्सवादी चेतना से अनुप्राणित प्रगतिवादी है। कवि पंत जी के शब्दों में -

''धन्य मार्क्स! चिर तमाच्छन्न पृथ्वी के उदय शिखर पर,
तुम त्रिनेत्र के ज्ञानर चच्छु से प्रगट हुए प्रलयंकर।''

पंत जी नें अपनी अनेक कविताओं में मार्क्स व मार्क्सवाद का यशोगान किया है। साम्यवाद ने समाज में, समता, समानता, सामाजिक चेतना को जागृत करने में सहयोग किया है -

''मार्क्सवाद ने दिया जगत को सामूहिक जनतंत्र महान,
भव जीवन के दैन्य दुःख से किया मनुजता का परित्राण।

×××

गाँधीवाद जगत में आया ले मानवता का नव मान,
सत्य अहिंसा से मनुवोचित नव संस्कृति करने निर्माण,
मनुष्यत्व का तत्व सिखाता निश्चय हमको गाँधीवाद,
सामूहिक जीवन विकास की साम्य योजना है अविववाद।''

मार्क्सवाद के प्रति आकर्षण, उसके दर्शन पर नहीं, बल्कि उसके वैज्ञानिक लोकतंत्र के रूप में आदर्शवाद में हैं जो व्यापक जनहित में है, सर्वहारा वर्ग के हित में है। उपेक्षितों, दलितों के पक्ष में है। मार्क्सवादी चेतना में प्रगतिवाद अवधारणा निहित हैं। हिन्दी का प्रगतिवाद, मार्क्सवाद, गाँधीवाद और भारतीय समाजवाद एवं मानवतावाद से अभिप्रेत है।

''अन्तःमुख अद्वैत पड़ा था,
युग-युग से निष्क्रिय निष्प्राण।
जग में उसे प्रतिष्ठित करने,
दिया साम्य ने वास्तु विधान।''

रूढ़िविरोध, शोषक वर्ग के प्रति न्याय की आकांक्षा, पूँजीपतियों, मिल-मालिकों, शोषकों के प्रति आक्रोश, क्रान्ति की भावना, मार्क्स एवं रूस का गुणगान, मानवतावाद, आशावाद, नारी सम्बन्धी नवीन विचार, नारी जागरण, सामाजिक समस्याओं का चित्रण, सामाजिक न्याय की आकांक्षा मूलक प्रगतिवादी चेतना कवि पंत की प्रगतिवादी कविताओं की विशेषतायें हैं। कला सम्बन्धी नवीन विचारादि।

''रूढ़ि विरोध -

दूरत झरो जगत के तीर्ण पत्र,
हे सस्तध्वस्त हे शुंष्कशीर्ण
हित-ताप-पीत मधुवातभीत
तुम बीत राग, जड़ पुराचीन।।''

नारी सशक्तिकरण, नारी चेतना, नारी जागरण पर पंत जी की प्रगतिवादी कवितायें मूल्य मूलक हैं, रूढ़ि विरोध, शोषकों पर प्रहार, शोषितों, उपेक्षितों और असहायों के प्रति न्याय की आकांक्षा समाजवादी सामाजिक व्यवस्था की इच्छा प्रगतिवादी चेतना के तहत हैं। पंत जी के काव्य में छायावाद, प्रगतिवाद, गाँधीवाद, मार्क्सवाद, अरविन्दवाद, तो है ही, मानवतावाद शिखर पर हैं -

''मानवता निर्माण करें जन,
चरणमात्र हैं जिसके भूपर,
हृदय स्वर्ग में हो लय जिसका,
मन हो स्वर्ग क्षितिज से ऊपर।
मनुज प्रेम की बाँहों में बँध,
मानवता को अंगीकार करें।

मात्र तुम्हारी करुणा धारा,
मर्त्य धरा के प्रति, धरें।।''

निष्कर्ष:-

पंत के काव्य में विविधवादों के तहत पर्यावरण चेतना, प्रकृतिप्रियता और जीवन के प्रति मानवीय गान गुंजायमान हैं। छायावाद, प्रगतिवाद, गाँधीवाद, मार्क्सवाद, अरविन्दवाद और व्यापक विस्तृत विराट मानवतावाद में प्रकृतिप्रियता और गहरी पर्यावरण चेतना विद्यमान है। पंत जी की दीर्घकालीन काव्यसाधना में अनेक आयाम है। अनेक पड़ाव, अनेक विस्तार, अनेक चढ़ाव और अनेक संवेदनशील पहलू रेखांकित है। पंत के काव्य में प्रकृति, पर्यावरण और जीवन की मानवीय संवेदनायें निहित हैं। पंत सम्पूर्णता के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनमें विविधवाद और पर्यावरण चेतना है।

****

संदर्भ –

1. सुमित्रानन्दन पंत - युगवाणी, पृष्ठ 63
2. सुमित्रानन्दन पंत - युगवाणी, 'साम्यवाद-गाँधीवाद', पृष्ठ 58
3. सुमित्रानन्दन पंत - युगवाणी, पृष्ठ 47
4. सुमित्रानन्दन पंत - युगान्त, पृष्ठ 15
5. सुमित्रानन्दन पंत - युगपथ, पृष्ठ 63

उदय प्रकाश की चयनित कविताओं में नारी संघर्ष का चित्रण

Mrs.K. Kavitha
Ph.D Scholar
Annamalai university
Ph. No.9345549568

भूमिका:-

आवेग, आवेश ,विडम्बना और विलाप से मिलकर उदय प्रकाश की कविता बनती है |उसमे इतना धारदार व्यंग्य है जो करुणा जगाता है | उनकी कविताओं में ठंडापन नहीं आग, चीख और उत्तेजना का संश्लेषण मिलता है | उदय प्रकाश की काव्यशैली पर चित्रकला का भी मिला जुला

प्रभाव है | उदय प्रकाश की कविताओं में झलकते -उभरते स्त्री - चरित्र ऐसे सवालों को उठाते हैं कि सर झककर खामोश रहना पड़ता है | उनकी कविताओं में नारी पर और उनकी समस्याओं पर लिखी गयी कविताएँ माँ ,नींव की ईंट हो तुम दीदी , कवि की पीड़ित ख़ुफ़िया आँखें ,वे यही कहीं हैं ,पंचनामे में जो दर्ज नहीं हैं और औरतें आदि का विश्लेषण करेंगे |नारी जीवन का मूलाधार उसके समान अधिकार को प्राप्त कर लेने में हैं, तभी वह एक विकासपूर्ण तथा गतिशील जीवन जी सकती है। नारी अपनी अस्थित्व के लिये समान अधिकार को पाने की कोशिश कर रही है,जो उसका मूलाधार होता है। प्रधान समाज में नारी की हैसियत ,अधिकार ,अस्मिता तथा अस्थित्व को लेकर ,नारी के सामने कई प्रश्न हैं जिसका हल वह स्वयं ढूंढती रहती है। इतिहास ही साक्षी होती है कि मातृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति , केंद्र में थी, हाशिए पर नहीं थी। नारी हर रूप में चाहें वह मां हो, बहन हो या पत्नी हो , पुरुष का संस्कार करती है |मां बनकर पुरुष को जन्म देती है, पोषण करती है,वाणी भी प्रदान करती है। हर मनुष्य के जीवन में ,सांस में जुड़ा हुआ ,मिला हुआ और उसके जन्म से मृत्यु तक ,एक ही शब्द होता है | "माँ " कवि अपनी "माँ " शीर्षक कविता में कहते हैं -वही पहला वाक्य

जिसके मध्य में मैं इस धरती पर आया
और जिसमे एक ही शब्द था
फ़क्त एक व्यंजन और उसी में विलीन होता एक स्वर
बिना किसी विराम के सौरमंडल के अनंत तक जाता हुआ

उनके यह पद का तात्पर्य यह होता है कि माँ यह एक शब्द पूरी दुनिया में इसकी ध्वनी गूँज उठती है | कवि ने अपनी बुरी स्थितियों में यह अनुभव किया है कि हमेशा एक हाथ उनके साथ रहता है ,वह होता है उनकी माँ का |

उनके शब्दों में देखेंगे -

अचरज है कि आज तक
जब भी घिरता हूँ मैं अँधेरे और
अकेलापन में अपनी जर्जरता के साथ
हर बार पता नहीं कहाँ से चला आता है वही पहला वाक्य
मेरी ओर अपने व्याकुल हाथ बढ़ाता हुआ

कवि को यह बात और अचरज में डालता है कि यह एक शब्द दुनिया की सभी भाषाओं के शब्दकोशों में मौजूद है | पर किसी भी व्याकरण ने क्यों इसको एक वाक्य का दर्ज़ा नहीं दिया था ? हम से भी यह सवाल करते हैं -उसे

समूचे वाक्य का दर्ज़ा नहीं दिया था
आप बताएँगे क्यों ?
और यह भी कि आखिर आप किस वाक्य के बीचोंबीच
अपने शहर या पृथ्वी पर आये थे ?